हिन्दी विभाग , चिन्मय विद्यालय , बोकारो से प्रकाशित त्रैमासिक ई - पत्रिका नवम्बर 2021 , अंक - 11

नयी सुबह

हम बच्चों की ..

ॐ

चिन्मय विद्यालय , बोकारो

संपादक मंडल -:

ज्योति दुबे

आरती कुमारी

सम्पादन सहयोग एवं अंक - सज्जा :

अंशु उपाध्याय

संपादकीय विभाग : -

हिन्दी विभाग

चिन्मय विद्यालय , बोकारो

झारखंड 827006

तकनीकी एवं सम्पादन समूह :

सुहानी सिंह

अंकित सारंगी

शौर्य

शिवप्रिया शर्मा

अनुष्का

सोनाक्षी श्रीवात्सव

प्रज्वल श्रीवात्सव

आनंद कुमार

हर्षिता सिंह

ईशिता दुबे

इस अंक में

गुरु ध्यानम	03
संपादक की कलम से	04
शब्द निर्झर	05
साक्षात्कार	06
राष्ट्रभाषा हिन्दी	08
कुदरत	09
लोगो की बातें	10
वर्तमान काल में हिन्दी की दशा और दिशा	15
चुटकुले	16
बूझो पहेली	17
मेरे पापा	18
शख्स	19
एक दीपक मैं जलाऊ , एक दीपक तुम जलाओ	20

गुरु ध्यानम्

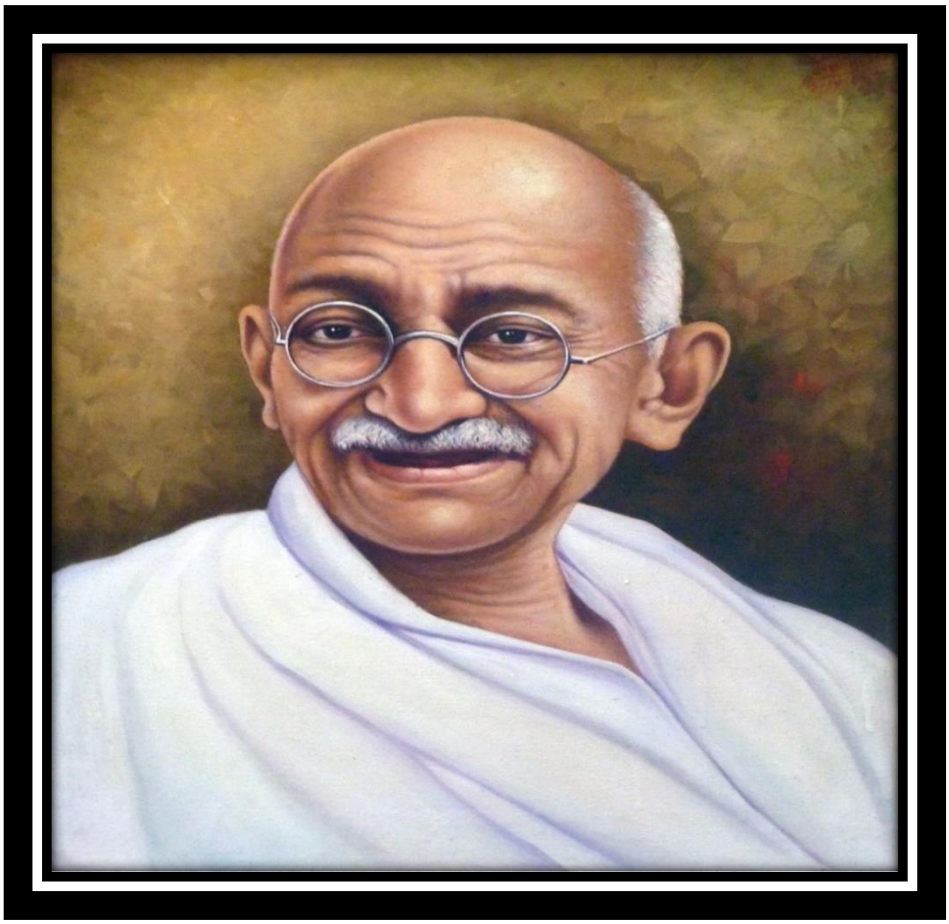

खुद वो बदलाव बनिए जो आप
दूसरों में देखना चाहते हैं ।

- महात्मा गांधी

संपादक की कलम से

प्यारे बच्चों

मौसम में परिवर्तन के साथ ही एक बार फिर वायरल बीमारियों का हमला तेज हो गया है। सुबह शाम हो रही ठंड बच्चों और बुजुर्गों के लिए खतरा है। अतः ऐसे में अपने खान-पान का विशेष ध्यान रखें। जैसा कि हम सब जानते हैं कि कोरोनावायरस अभी पूरी तरह गया नहीं है ऐसे में जो स्कूल खुल रहे हैं तो आप सभी को कोरोना से बचाव हेतु सभी नियमों का पालन जरूर करें क्योंकि सतर्कता ही बचाव है। आपके वार्षिक परीक्षा की तैयारियां भी तो शुरू हो गई हैं इसमें स्वयं को स्वस्थ रखना आपके लिए नितांत आवश्यक है।

अर्थात स्वस्थ रहें,

सतर्क रहें और

मास्क का प्रयोग जरूर करें।

धन्यवाद

शब्द निर्झर

चित्र देखकर आपके मन में जो भी भाव उत्पन्न हो रहे है , उस पर कविता या कहानी लिखें :

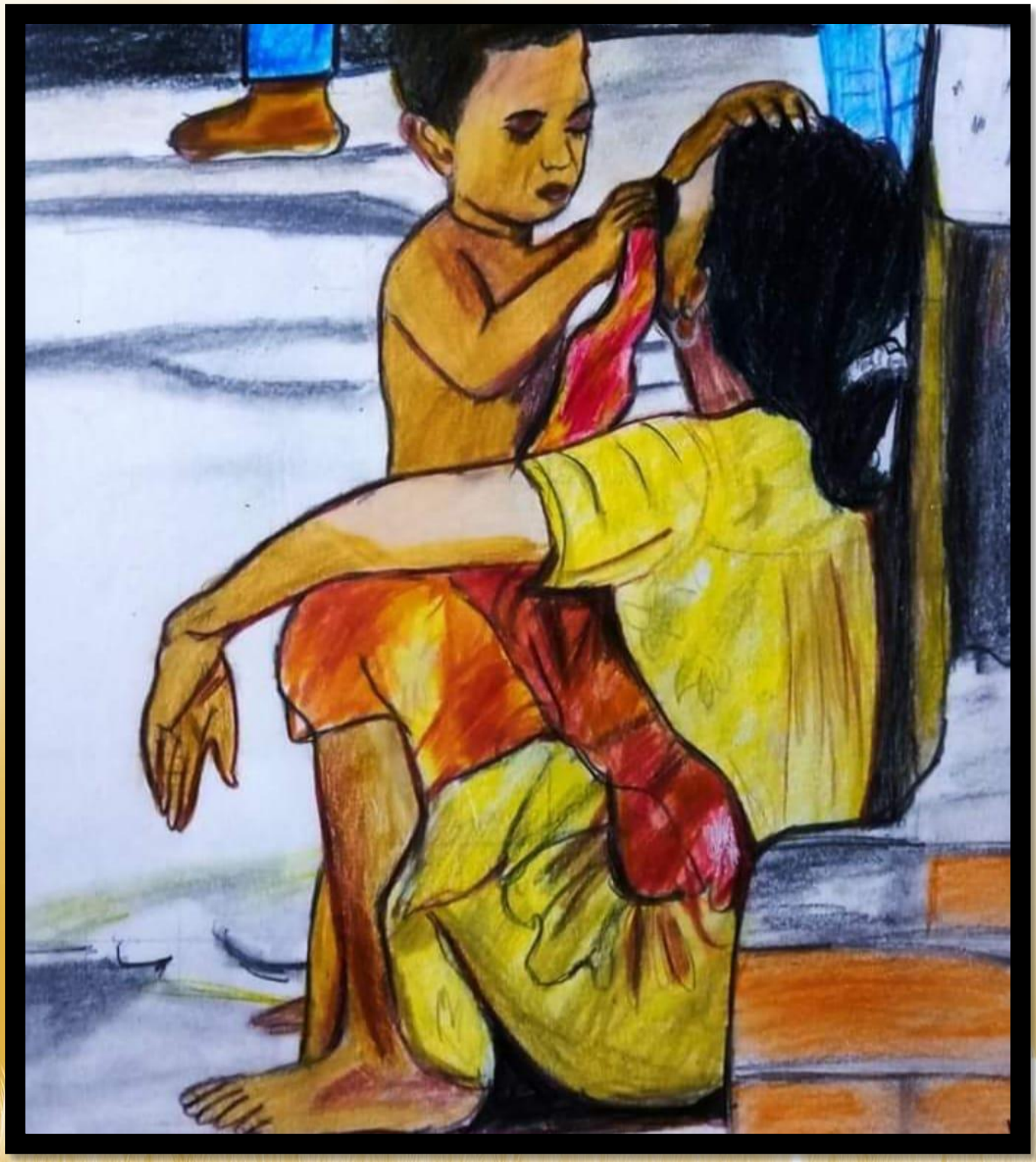

साक्षात्कार -

प्रश्न:- चिन्मय विद्यालय में आप का पदापर्ण कब हुआ?

उत्तर:- चिन्मय विद्यालय में मेरा पदापर्ण 23 जून 1986 को हुआ।

प्रश्न:- आप की प्रारंभिक और उत्तरोतर शिक्षा कहाँ से हुई?

उत्तर:- मेरी प्रारंभिक शिक्षा बोकारो स्टील सिटी सेक्टर 3 के स्कूल से हुई और उत्तरोतर शिक्षा धनबाद के एस एस एलनटी महिला कॉलेज से पूरी हुई।

प्रश्न:- आप अपने जीवन की एक यादगार एवं रोचक घटना के विषय में हमें बताए।

उत्तर:- हम अपने जीवन में किसी न किसी व्यक्ति से कुछ सीखते हैं। वैसी एक घटना मैं बताना चाहती हूँ। यह घटना तब की है जब मैं शिक्षका के रूप में इस विद्यालय में आई थी। हमारे विद्यालय में रह चुके प्रचार्या महोदया, उन्होंने हर कदम पर कुछ न कुछ सिखाया है। उन्होंने हमें विशेष रूप से मुझे विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों में कैसे आचरण रखना है, सिखाया था । यूँ कहें कि जीवन जीने का एक सकारात्मक सलीका सिखाया है। साथ ही साथ कक्षा-कक्ष के दौरान विद्यार्थियों में विभिन्न विषयों के प्रति रुचि कैसे लाना है वह भी सिखाया।

प्रश्न:- आप हिंदी भाषा को किस तरह देखती हैं?

उत्तर:- जैसे कि आप सब जानते हो कि हिंदी हमारी राजभाषा है। एक तरह से देखा जाए तो यह हमारी पहचान है। इसीलिए मेरा मानना है कि हर विद्यार्थी को हिंदी शुद्ध-शुद्ध बोलनी और लिखनी चाहिए। मैं ये नहीं कहती कि अंग्रेजी भाषा का प्रयोग नहीं करना चाहिए। हमें अंग्रेज़ी के साथ-साथ अपनी राजभाषा को भी जाननी चाहिए।

प्रश्न:- अपनी नगर में आदर्श विद्यार्थी की क्या परिभाषा होगी?

उत्तर:- अनुशासित विद्यार्थी ही आदर्श विद्यार्थी कहलाता है। यदि उनमें अनुशासन का अभाव है, तो आदर्श विद्यार्थी होने की गुजाईश न के बराबर होगी। इसलिए जो विद्यार्थी अपने समय का सदुपयोग करना समझे, जो अपने गुरुजनों का आदर करें, वहीं आदर्श विद्यार्थी होता है। कई बार विद्यार्थीयों में देखा जाता है कि परीक्षा के दौरान ही पढ़ाई शुरू करते है, जिससे समय की कमी होती है और उन्हें मानसिक तनाव का सामना करना पड़ता है। ऐसी स्थिति से बचना है, तो विद्यार्थियों को परीक्षा के पूर्व से ही अपनी पढ़ाई ओर देनी चाहिए जिससे वे मानसिक तनाव से मुक्त हो सकेंगे। इसीलिए नियमित तौर पर जो बच्चे पढ़ते है, वे स्वस्थ व सुरक्षित होते है। और वे ही बातें उन्हें एक आदर्श विद्यार्थी बनाता है।

प्रश्न:- चिन्मय विद्यालय की शिक्षिका के रूप में आपका क्या अनुभव रहा?

उत्तर:- चिन्मय विद्यालय अपने आप में ही एक आदर्श विद्यालय है, और ऐसा आदर्शवादी विद्यालय को छोड़ना ऐसा सोच भी नहीं सकती। हमारे विद्यालय का माहौल जो हमे एक दूसरे से जोड़ता है, हमें एक बनाता है। इसकी सबसे बड़ी खासियत यह है कि यहाँ प्राचार्य महोदय, शिक्षक-शिक्षिका, बस कंडोक्टरों,

ऑफिस स्टाफ आदि सभी का आपस में एक परिवार की तरह रहना, विपरीत परिस्थियों में एक दूसरे का हाथ बाँटना आदि है। ये ही बाते इस विद्यालय को अन्य विद्यालयों से विशेष बनाती है इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए मैंने अपनी बच्चीं की शिक्षा यही से करवाई है।

प्रश्न:- वर्तमान समय में हिंदी विषय के अस्तित्व को लेकर अपकी क्या राय है?

उत्तर:- देखिए, मेरा ऐसा मानना है कि यदि हिंदी भाषा का अस्तित्व को बनाए रखना है, तो हमें गंभीर रूप से इस बारे में सोचना होगा। केवल बात करने से आज तक कोई काम नहीं हुआ, इसके लिए कुछ कदम उठाने होंगे।जैसे :- आज के बच्चों में ऐसा देखा जाता है कि हिंदी भाषा के प्रयोग से स्वयं को दूसरों से हीन समझते या यूँ कहे कि यदि कोई बच्चा प्रयोग करें तो उसे डाँटकर बोला जाता है कि वे अंग्रेज़ी का प्रयोग करें। यह बातें शिक्षिकों में भी देखने को मिलती है। यदि हम स्वयं शिक्षक होकर ऐसी सोच रखेंगे तो हम कैसे बच्चों से उम्मीद रख सकेंगे कि वे भाषा का सम्मान करें।

इसीलिए मेरा ऐसा मानना है कि यदि बच्चों में रुचि व हिंदी भाषा के लिए सम्मान लाना है, तो उन्हें केवल अंग्रेजी तक ही सीमित न रखें। उन्हें रोका या टोका न जाए। स्वतंत्र रूप से उन्हें बोलने दिया जाए। हाँ, यदि कोई त्रुटि उनसे होती है, तो उसका निवारण करें ,पर धैर्य के साथ।

प्रश्न:- बच्चों में हिंदी विषय के प्रति कम हो रहे रुझान के प्रति आप क्या कहना चाहेगी?

उत्तर:- हाँ!बिल्कुल, यह बात बहुत ही गंभीर है। बच्चें हिंदी भाषा को बोलने के साथ लिखना नहीं चाहते है। यह बातें रुचि के अभाव के कारण उत्पन्न होती है। भाषा के प्रति रुझान को लाना होगा।

हमें विभिन्न प्रकार की क्रियाकलाप, प्रतियोगिताएँ आयोजित करनी चाहिए जिससे उनमें रुचि उत्पन्न हो सकें। जैसे:- खेल का मैदान। जहाँ हम बच्चों को यह छूट दे कि वे सभी आपस मे हिंदी भाषा में बात कर सकें। रुचि तभी ला सके है, जब हम उन्हें हम अपनी भाषा में अभिव्यक्त करने का मौका दें।

रुचि ऐसी चीज़ है, जो बलपूर्वक नहीं लाई जा सकती है। ये स्वयं से बाहरी प्रभाव से आती है।

प्रश्न:- विद्यालय के शिक्षकों और छात्रों के लिए आपका क्या संदेश है?

उत्तर:- मैं यह संदेश देना चाहुँगी कि हमारा विद्यालय अपने आप में ही सर्वश्रेष्ठ है। इसकी गरिमा दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। इसकी उन्नति के लिए हमें स्वयं को आधुनिकता के साथ कदम मिलाते हुए आगे बढ़ना चाहिए। विद्यालय की उन्नति के लिए सोचना चाहिए ,इसके साथ विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य के लिए नए-नए कदम उठाने चाहिए। इन्हीं शब्दों के साथ आप सभी का उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ।

धन्यवाद!

हरि ॐ!

राष्ट्रभाषा भारत की है हिंदी,
सरल सुन्दर यह है |
भारत की पहचान यह,
भारत की शान यह।
हर भारतीय के दिल,
दिमाग में है यह|
सुरीली वाणी है हिंदी की,
हमें लगे हर पल प्यारी |
पूरे देश को जोड़े रखा है,
वो मज़बूत धागा है हिंदी|
साहित्य की फुलवारी,
सरल सुबोध पर है भारी ।
कश्मीर से कन्याकुमारी,
राष्ट्रभाषा हमारी ।

कवयित्री
~ शाम्भवी

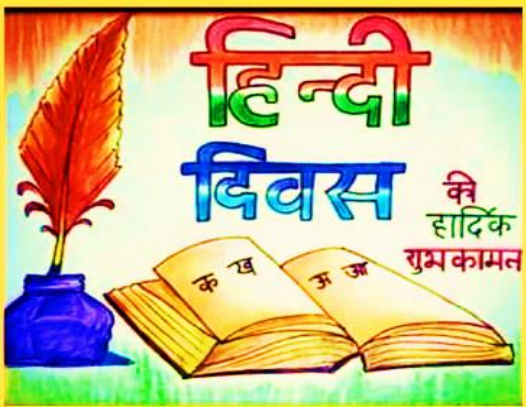

कुदरत

हरे पेड़ पर चली कुल्हाड़ी
धूप रही ना याद।
मूल्य समय का जाना हमने
खो देने के बाद।।
खूब फसल खेतों से ले ली
डाल डाल कर खाद।
पैसों के लालच में कर दी
उर्वरता बर्बाद ।।
दूर-दूर तक बसी बस्तियाँ
नगर हुए आबाद।

बन्द हुआ अब तो जंगल से
मानव का संवाद।।
ताल तलैया सब सूखे हैं
हुई नदी में गाद।
पानी के कारण होते हैं
हर दिन नए विवाद।।
पशु पक्षी बेघर फिरते हैं
कौन सुने फरियाद।
कुदरत के दोहन ने
सबके मन में भरा विषाद।।

- अभिभावक (शिवप्रिया)

लोगों की बातें

एक बार की बात है एक ब्राम्हण अपनी बकरी को लेकर जंगल से अपने घर लौट रहा था। जंगल बड़ा ही घाना था और रात भी हो रही थी। वह जल्दी जल्दी अपने घर के तरफ़ लौट रहा था क्योंकि उसे डर लग रहा था कि कहीं उसे कोई डाकू पकड़कर मार न दे। उसकी जो बकरी थी वह बड़ी हट्टी-कट्टी थी, वह ब्राम्हण उसे हमेशा अपनी शान समझता था क्योंकि उसे उस बकरी से इतना मुनाफ़ा होता था कि उसे विश्वास भी नहीं होता था। लेकिन कहते है न सड़क पर पत्थर हो तो कोई भी उस पर ध्यान नहीं देता परंतु कहीं सोना गिर जाए तो सब उसको पाने के लिए लड़ाई करने लगते हैं। वही हुआ तीन चोरों की नज़र उस बकरी पर गई, तीनो के मन में आता हैं कि अगर उस बकरी को चुरा लेंगे तो खाने में मुनाफ़ा होगा और अगर बेचेंगे तो भी मुनाफ़ा होगा । क्या करें ? हम इंसानो की जाति ही ऐसी होती हैं। हम सिर्फ़ अपनी भलाई के बारे में ही सोचते हैं, दूसरो के बारे में नहीं सोचते हैं।

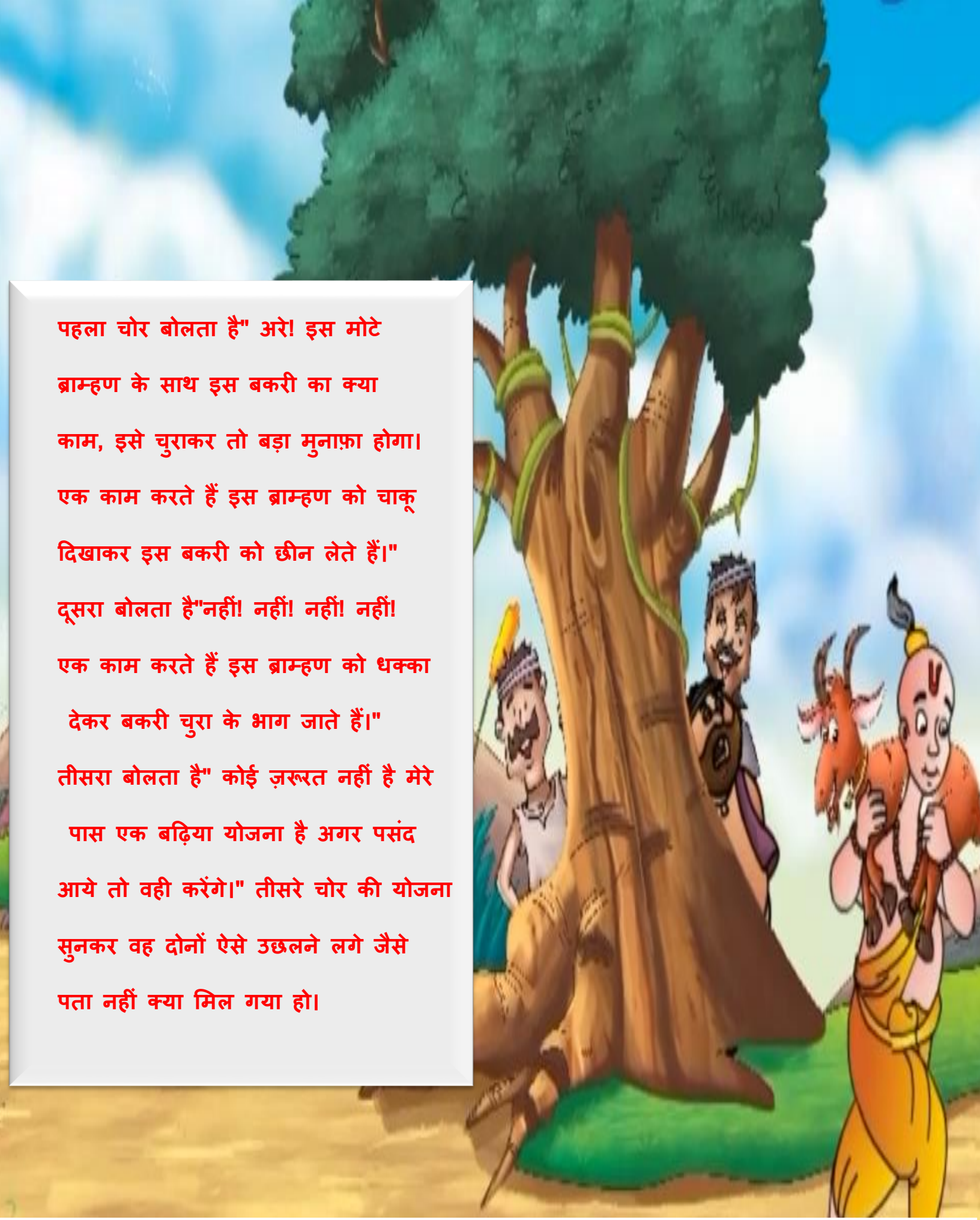

पहला चोर बोलता है" अरे! इस मोटे ब्राम्हण के साथ इस बकरी का क्या काम, इसे चुराकर तो बड़ा मुनाफ़ा होगा। एक काम करते हैं इस ब्राम्हण को चाकू दिखाकर इस बकरी को छीन लेते हैं।"

दूसरा बोलता है"नहीं! नहीं! नहीं! नहीं! एक काम करते हैं इस ब्राम्हण को धक्का देकर बकरी चुरा के भाग जाते हैं।"

तीसरा बोलता है" कोई ज़रूरत नहीं है मेरे पास एक बढ़िया योजना है अगर पसंद आये तो वही करेंगे।" तीसरे चोर की योजना सुनकर वह दोनों ऐसे उछलने लगे जैसे पता नहीं क्या मिल गया हो।

जब वह तीनो बकरी को चुराने जाते हैं तो पहला चोर ब्राम्हण को बोलता है"प्रणाम पुरोहित जी! कैसे हैं? आप और इस गधे को लेकर कहा जा रहे हैं।" यह सुनकर वह ब्राम्हण बोलता है"भाईसाब आपकी आँखे ठीक है ना! किस गाँव से आये हैं? ये गधा नहीं बकरी है।" पहला चोर बोलता है"अरे! क्या बोलते हैं पुरोहित जी? आप इस गधे को बकरी बोल रहे हैं, पता नहीं क्या हुआ हैं आप को! चलिए मैं अब चलता हुँ।" तभी पहला चोर के जाने के बाद दूसरा चोर आता हैं और बोलता है"प्रणाम पुरोहित जी! गाँव में सब कुछ ठीक चल रहा हैं ना और आप ठीक हैं ना? ब्राम्हण बोलता है"हाँ मैं ठीक हुँ और गाँव में भी सब कुछ अच्छा चल रहा है, तुम अपनी बताओ?" दूसरा चोर बोलता है"अरे! मैं तो ठीक हुँ,वैसे आप ये कुत्ता लेकर क्यों चल रहे हैं? ब्राम्हण बोला "हे भगवान!!! तेरी आँखों की नज़र ठीक है ना?" दूसरा चोर बोलता है"हाँ! क्या हुआ क्यों पूँछ रहे हो?" ब्राम्हण बोला "तुझे ये बकरी कुत्ता दिख रहा है! अजीब इंसान है!" दूसरा चोर बोला "अरे! मैं आपको कितना बड़ा विद्वान समझता था! घंटा विद्वान हैं आप। मैं अपने गाँव में आपकी पूजा करवाने वाला था, आप कुत्ता को बकरी समझ रहे हैं। क्या काम करेंगे आप?

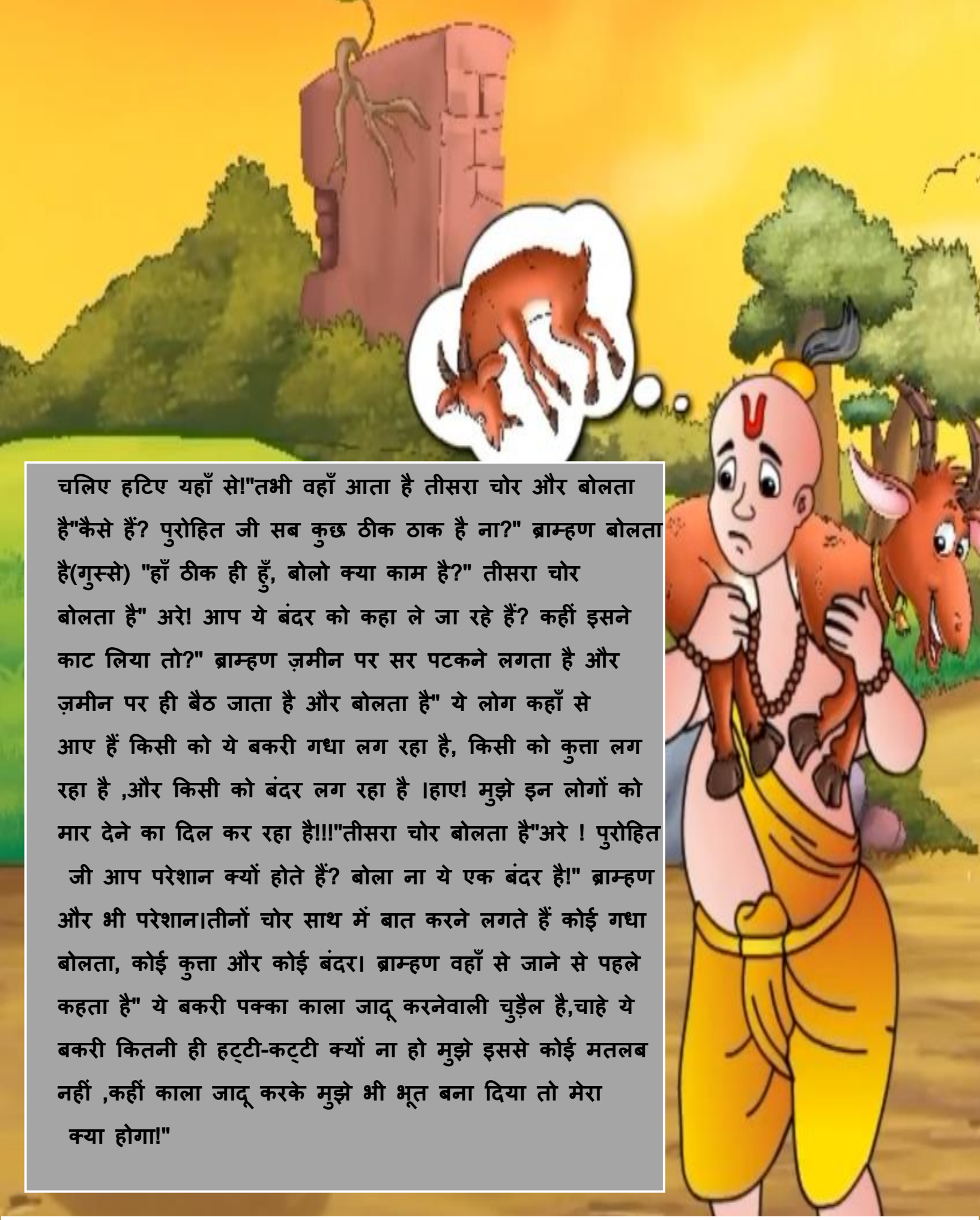

चलिए हटिए यहाँ से!"तभी वहाँ आता है तीसरा चोर और बोलता है"कैसे हैं? पुरोहित जी सब कुछ ठीक ठाक है ना?" ब्राम्हण बोलता है(गुस्से) "हाँ ठीक ही हुँ, बोलो क्या काम है?" तीसरा चोर बोलता है" अरे! आप ये बंदर को कहा ले जा रहे हैं? कहीं इसने काट लिया तो?" ब्राम्हण ज़मीन पर सर पटकने लगता है और ज़मीन पर ही बैठ जाता है और बोलता है" ये लोग कहाँ से आए हैं किसी को ये बकरी गधा लग रहा है, किसी को कुत्ता लग रहा है ,और किसी को बंदर लग रहा है ।हाए! मुझे इन लोगों को मार देने का दिल कर रहा है!!!"तीसरा चोर बोलता है"अरे ! पुरोहित जी आप परेशान क्यों होते हैं? बोला ना ये एक बंदर है!" ब्राम्हण और भी परेशान।तीनों चोर साथ में बात करने लगते हैं कोई गधा बोलता, कोई कुत्ता और कोई बंदर। ब्राम्हण वहाँ से जाने से पहले कहता है" ये बकरी पक्का काला जादू करनेवाली चुड़ैल है,चाहे ये बकरी कितनी ही हट्टी-कट्टी क्यों ना हो मुझे इससे कोई मतलब नहीं ,कहीं काला जादू करके मुझे भी भूत बना दिया तो मेरा क्या होगा!"

वह ब्राम्हण उस बकरी को वहीं फेंककर चला जाता है। वह तीन चोर उस मौके का फ़ायदा उठाकर उस बकरी को उठाकर भाग जाते हैं। वह तीनों ब्राम्हण को बेवकूफ़ बनाने में सफल हो जाते हैं। इसी लिए कहते हैं कि लोगों की बातों में कई बार झूठ छुपा रहता हैं इसीलिए हमें हमेशा अपनी दिल की बात ही सुननी चाहिए। क्या पता कि कौन आपसे सच बोल रहा हो और कौन झूठ।

अभिभावक- शिवप्रिया

वर्तमान काल में हिंदी की दशा और दिशा

जैसा कि हम सभी जानते हैं , महात्मा गांधी के कथित कथन - देश की एकता और अखंण्ता को बनाए रखने की क्षमता अगर किसी में है तो वह हिंदी भाषा है। जिस देश को अपने राजभाषा पर गर्व रहता है वह हज़ार मानकों में भी हीरे की तरह चमकता है ।

आज जब हम उत्साहपूर्वक स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव समारोह मना रहे हैं और अंग्रेजी , अंग्रेज और अंग्रेजियत से ऊपर उठकर अपनी राजभाषा को स्थापित करने के लिए हिंदी दिवस , हिंदी सप्ताह और हिंदी पखवाड़ा जैसे कार्यक्रम का आयोजन करते आ रहे हैं, तो नि:संदेह हमारा ध्यान हिंदी की दिशा और दशा की ओर चल जाता है। हिंदी को पूर्ण स्थापित और सर्वजन की भाषा के रूप और व्यवहार में लाने के लिए हिंदी दिवस और हिंदी पखवाड़ा जैसे आयोजनों की आवश्यकता पड़ रही है ।

अपने बोकरो नगर की ही बात करें तो झारखण्ड के सबसे उन्न्त पुस्तकालय ' बोकरो इस्पात पुस्तकालय ' में लाखों के हिंदी साहित्य की पुस्तकों का न तो नियमित पाठक मिल पा रहे हैं और न ही हिंदी को सम्मान देने वाले शरद जोशी , माखुर , नरेंद्र कोहली ,महादेवी वर्मा जैसे साहित्यकारों की कृतियों को धूल धूसरित होने से बचा पा रहे हैं ।

संपूर्ण विश्व में जितनी भी भाषाएँ बोली अथवा लिखी जाती है उन सभी भाषाओं से ऊपर हिंदी का स्थान है । इसलिए,यदि हमें हिंदी की दशा और दिशा को बदलनी है तो उस दिशा में ठोस कदम उठानी पड़ेगी । हरि ओम्!

- राज हर्षिता 9 / ब

चुटकुले

मदन : तुम खाली पेट कितने सेब खा सकते हो?
रवि : मैं 6 सेब खा सकता हूँ ।
मदन : गलत , तुम सिर्फ 1 सेब खा सकते हो क्योंकि जब तुम दूसरा खाओगे तो तुम्हारा पेट खाली नहीं होगा |

मालिक : ' तुमने पिछली नौकरी क्यों छोड़ दी ? '
संता : ' परेशानी के कारण। '
मालिक : ' कैसी परेशानी थी तुम्हें? '
संता : ' मुझे नहीं , वे लोग मुझसे परेशान थे । '

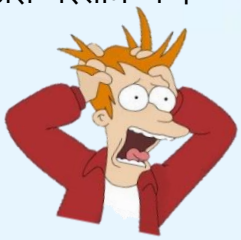

मास्टर जी :अस्पताल में मरीज़ को ऑपरेशन से पहले बेहोश क्यों किया जाता है ?
छात्र : अगर बेहोश नहीं किया और मरीज़ ऑपरेशन करना सीख गया तो डॉक्टर को कौन पूछेगा ।

टीचर : दुनिया में कितने देश हैं ?
पप्पू : एक ही है ..... भारत ।
टीचर : तो अमेरिका, फ्रांस, इंग्लैड , पाकिस्तान , जर्मनी आदि क्या है ?
पप्पू :ये तो सारे विदेश है ना सर जी !!!

शिष्य : गुरु जी, यथार्थ और भ्रम में क्या अंतर है?
गुरु जी : तुम्हारा यहाँ उपस्थित रहना और मेरा प्रवचन करना यथार्थ है ....
लेकिन , मेरा यह सोचना कि तुम मेरी बातों पर ध्यान दे रहे हो ,भ्रम है ।

अध्यापक ने परीक्षा में चार पृष्ठों का निबंध लिखने को दिया - विषय था -
' आलस्य क्या है ?
एक विद्यार्थी ने तीन पृष्ठों को खाली छोड़ दिया और चौथे पर बड़े -बड़े अक्षरों में लिखा ---
' यही आलस्य है '

जरा बताओ तो...

1. वह कौन -सा फूल है ,
   जिसके पास कोई रंग और कोई महक नहीं है ।
2. ऐसी कौन - सी जगह है, जहाँ पर सड़क है पर गाड़ी नहीं,
   जंगल है पर पेड़ नहीं और शहर है पर घर नहीं ?

3. खुद कभी वह कुछ न खाए,
   लेकिन सब को खूब खिलाए |
4. कमर पतली है, पैर सुहाने,
   कहीं गए होंगे बीन बजाने |

5. मेरे नाम से सब डरते हैं,
   मेरे लिए परिश्रम करते हैं |
6. एक गुफ़ा के दो रखवाले,
   दोनों लंबे, दोनों काले |

7. बूझो भैया एक पहेली,
   जब काटो तब नई नवेली |
8. बेशक न हो हाथ में हाथ,
   जीता है वह आपके साथ |

1. अप्रैल फूल 2. नक्शा 3. चम्मच 4. मच्छर 5. परीक्षा 6. मूँछें 7. पेंसिल 8. परछाई

मेरे पापा

यूं तो जिंदगी में बहुत से रिश्ते देखे हैं,
पर मेरे पापा के सामने वो सारे फीके हैं।

यूं तो लोग कहकर भी मुकर जाते हैं,
पर पापा वो हैं जो बिन कहे ही सब कर जाते हैं।

बाहर से सख्त, भीतर से नर्म होते हैं,
पापा वो हैं जो बच्चो में फर्क नहीं करते हैं।

मुश्किलों की कड़ी धूप अकेले ही सहते हैं,
और सुख की ठंडी छांव हमें देते हैं।

मेरी खुशी मेरी मुस्कान ही उनकी पहचान है,
जिसके पीछे उनका त्याग तपस्या रूपी वरदान है।

आंखों में मेरे सजाए उन्होंने अपने सपने हैं,
पूरा जिनको करूंगी यह मेरे बस में है।

सर्व संस्कार, ज्ञान, गुरु सम्मान उन्होंने सिखलाया है,
जीवन पथ पर अग्रसर होऊं मैं कैसे यह भी बताया है।

पिता जिंदगी का अटूट विश्वासी धागा है,
उनकी बेटी हूं मैं इस पर गर्व उनसे भी ज़्यादा है।

-इप्शिता तिवारी
-कक्षा : ७/अ

शख़्स

शख़्स रंग नया राँगिनी है नई
शख़्स धड़कन की धड़कती ध्वनि है नई
शख़्स मेरी रजनी की नई चाँदनी
शख़्स से चश्म में चमक है नई
शख़्स खुद से खुदा की है वर्तनी
तिरगी से भरी जिंदगी थी मेरी
शख़्स के जिक्र से रोशनी हो गई
शख़्स मेरी आधी बची जिंदगी
शख़्स संपूर्ण सृष्टि का सार नया
शख़्स के रूप में आरूप मे
विधाता ने खुद को किया है बयां
शख़्स से रगों में राग-रोग रवा
शख़्स दवा, दारू पुरानी, नशा नया
शख़्स शुश्क जर्द पत्ती गिरी
शख़्स शादाब-ए-शबाब की अज्ल-ए-कँवल
शख़्स मदन की कामुकता बदन की महक संदल सुगंध
मगन मैं मगन मनमीत मनप्रीत मै समन मगन
शख़्स खिलते चमन की जलन की वजह
शख़्स तरशा तराश कुरबत की कशिश
शख़्स शबनम की शग़फ आतिश-ए-दश्त की आशिकी
शख़्स-ए-रानाईं वसीहन ये कमाई मेरी
ऐसा क्या में लिखूँ जो वो है नहीं
शीशे मे शक्ल देखूँ अपनी
जो अक्स दिखे शख्स का, वो शख्सियत है वही
शख़्स सफर मेरा सफर-ए-अंजाम भी
शख़्स हमसफर मेरा सफर-ए-अय्याम भी
मगन मैं मगन मनमीत मनप्रीत मै समन मगन ||

- प्रतीक 10 अ

एक दीपक मैं जलाऊँ , एक दीपक तुम जलाओ

तोड़ तम -कारा ह्रदय के, ज्योति के जय-गीत गाओ ।
एक दीपक मैं जलाऊँ, एक दीपक तुम जलाओ ॥

आँसुओं के स्याह मुखमण्डल रचो मुस्कान-लाली,
रह न जाए तारिका से जन-ह्रदय का शून्य खाली ।

प्राण-तारों में सभी के, प्यार की धड़कन जगाओ ।
एक दीपक मैं जलाऊँ, एक दीपक तुम जलाओ ॥

व्योम-बाला नव वधू -सी इस धरा पर आ गयी है,
चाँद-तारों की सजी बरात-शोभा छा गयी है ।

शर्वरी के पाँव जावक, हाथ में मेंहदी रचाओ ।
एक दीपक मैं जलाऊँ, एक दीपक तुम जलाओ ॥

स्नेह से भीगी हुई यह वर्तिका जलने लगी है,
पी तिमिर-विष भूतभावन शिव-सरणि चलने लगी है ।

प्यार का पीयूष बाँटो , मोहिनी को मत बुलाओ ।
एक दीपक मैं जलाऊँ, एक दीपक तुम जलाओ ॥

ज्योति गंगा-गीत में यह कल्पना की दीपमाला,
आरती के शब्द, भावों में ह्रदय का पूत प्याला ।

मरू, मनुज के नेह-नातों में नए सरगम सजाओ ।
एक दीपक मैं जलाऊँ, एक दीपक तुम जलाओ ॥

- प्रतीक 10/ अ

अगला अंक